खांसी में रक्तस्राव की उपेक्षा चिन्ताजनक

के0 के0 पाण्डेय
सीनियर थोरेसिक एण्ड कार्डियोवैस्कुलर सर्जन
इन्द्रप्रस्थ अपोलो हॉस्पिटल्स, सरिता विहार, नई दिल्ली–110076, भारत
drpandeykk@gmail.com

प्राप्त तिथि– 13.06.2016; स्वीकृत तिथि– 21.09.2016

सार– हमारे देश में असंख्य लोग खांसते समय बलगम में खून आने की समस्या से ग्रसित हैं। इस प्रकार के रोगी समस्या के वास्तविक कारणों से अनभिज्ञ होने के कारण अज्ञानतावश इस जीवन घातक रोग का उचित उपचार नहीं कराते हैं। प्रस्तुत लेख में खांसी में खूनी बलगम आने के सम्भावित कारणों का उल्लेख तथा उनके उचित उपचार हेतु दिशा निर्देश प्रस्तुत किये गये हैं।

बीज शब्द– खांसी में खून, अज्ञानता, थोरेसिक सर्जन।

Ignorance of bleeding cough-threat to life

K. K. Pandey
Senior Thoracic and Cardiovascular Surgeon
Indraprastha Apollo Hospitals, Sarita Vihar, New Delhi-110076, India
drpandeykk@gmail.com

Abstract- In our country, innumerable persons suffer from passing out blood during coughing. Due to the lack of awareness for the actual cause of cough with blood they unknowingly bear the risk of threat to life. This article presents various causes of coughing with blood and informs about the proper way to deal with them.

Key words- cough out blood, ignorance, Thoracic surgeon.

हमारे भारतीय उपमहाद्वीप में सभी आयु के असंख्य व्यक्ति जीवन के किसी न किसी पड़ाव पर खांसी से ग्रसित होते हैं। कभी–कभी सर्दियाँ प्रारम्भ होते ही खांसी की तीव्रता बढ़ जाती है और सूखा बलगम गीला होकर सफेद स्राव के रूप में परिवर्तित हो जाता है। प्रायः मौसम परिवर्तित होने पर निरन्तर और भयानक खांसी की घटनायें अत्यधिक बढ़ जाती हैं। हमारे उपमहाद्वीप में लोग अनेकों प्रकार की एलोपैथिक दवायें तथा घरेलू मिश्रणों को आजमाते हैं। कुछ समय के लिए उन्हें राहत भी मिल जाती है परन्तु खांसी की शिकायत पूरी तरह से ठीक नहीं होती क्योंकि हमारे यहाँ लोग खांसी होने के कारण पर ध्यान नहीं देते। हमारे चिकित्सक भी खांसी के कारणों की खोज के प्रति ज्यादातर गंभीर नहीं होते। सूखी खांसी का बार–बार आना ही नहीं, बल्कि खांसते समय खून का आना चिन्ता का विषय है। खांसी में खून का आना एक गंभीर और खतरनाक समस्या है। ऐसी हालत में लापरवाही करना मौत को दावत देने के समान है। हमेशा याद रहे कि खांसते समय खून निकलने की समस्या को गम्भीरतापूर्वक लेना चाहिये तथा तुरंत थोरेसिक सर्जन(वक्ष/छाती के शल्य चिकित्सक) से सम्पर्क करना चाहिये अन्यथा अज्ञानतावश अमूल्य मानव जीवन की क्षति हो सकती है।

खांसते समय खून क्यों आता है?– खांसी में खून आने के अनेकों कारण हैं। हमारे देश में सबसे अधिक महत्वपूर्ण कारण है– ट्यूबरक्युलर इन्फेक्शन(क्षयरोग संक्रमण)। जब क्षयरोग संक्रमण उचित देखभाल व उपचार के अभाव में अकस्मात् बहुत बढ़ जाता है तो रोगी की खांसी में खून आने लगता है। कभी–कभी तो खून का आना इतना कष्टदायक और घातक होता है कि सक्रंमित फेफड़े से रक्त निकलकर सामान्य फेफड़े में भर जाने के कारण कुछ ही घण्टों में मरीज की मृत्यु हो जाती है। प्रायः देखा गया है कि क्षयरोग के सफलतापूर्वक नियन्त्रण के उपरांत भी रोगी की खांसी में खून आता रहता है इसका कारण सीधा सा है कि सफल उपचार के बाद क्षयरोग संक्रमण तो फेफड़ें से दूर हो जाता है परन्तु संक्रमणका अवशिष्ट भाग फेफड़ों में बड़ी–बड़ी गुहाओं(cavity) के रूप में बचा रह जाता है। फेफड़ों के इस रिक्त भागों में अन्य प्रकार के जीवाणु मुख्यतः कवक(फन्गस), आसानी से प्रवेश कर जाते हैं और स्थायी रूप से स्थापित हो जाते हैं। चिकित्साशास्त्र में इस स्थिति को "एस्पर्जिलोमा" या "एस्पर्जिलोसिस" कहते हैं जिसके कारण खांसते समय खून निकलने की समस्या बनी रहती है। कभी–कभी तो खून इतनी ज्यादा मात्रा में निकलता है कि जीवन का खतरा भी उत्पन्न हो जाता है। हमारे देश में लाखों मरीज एस्पर्जिलोमा बीमारी से पीड़ित हैं और अज्ञानतावश अनेकों प्रकार के अनुचित इलाज

करते रहते हैं। जिसके कारण फेफड़ों का स्वस्थ भाग भी संक्रमित हो जाता है और मृत्यु के अलावा कोई रास्ता नहीं बचता।

फेफड़ों में बार–बार होने वाले संक्रमण से बचें– खांसी के समय बलगम में खून आने का दूसरा महत्वपूर्ण कारण है श्वांसनलिकाविस्फार(Bronchiectasis) की बीमारी। इस बीमारी के कारण श्वांसनली में बार–बार संक्रमण होने से लगातार बनी रहने वाली सूजन व जलन से श्वांसनली अत्यधिक क्षतिग्रस्त हो जाती है। जिसके कारण फेफड़ों में विस्तारित श्वांसनली की शाखायें या तो संकुचित हो जाती है या फिर सूजकर गुब्बारे की भांति हो जाती हैं। श्वांसनली की दोनों ही परिस्थितियाँ छाती से बलगम निकलने की प्रक्रिया को पूर्णतः बाधित कर देती है। बलगम श्वांसनली से होकर बाहर निकल जाने के बजाय श्वांसनली के भीतर ही स्थायी रूप से जमा रह जाता है। श्वांसनली की शाखाओं के समीप स्थित रक्त नलिकायें पतली व महीन होकर फैलकर चौड़ी(dialated) हो जाती हैं। ऐसी परिस्थिति में खांसते समय पड़ने वाले दबाव से रक्त नलिकायें फट जाती हैं और मरीज के मुँह से निकलने वाले बलगम में खून आने लगता है। श्वांसनलिकाविस्फार(Bronchiectasis) से पीड़ित रोगी को हृदय अथवा छाती के शल्यचिकित्सक से संपर्क कर फेफड़े के क्षतिग्रस्त भाग से जल्द से जल्द मुक्ति पानी चाहिए अन्यथा फेफड़े का स्वस्थ भाग भी सक्रंमित हो जायेगा। ऐसे रोगियों की खांसी में इतना अधिक खून भी निकल जाता है कि आकस्मिक रूप से रक्त चढ़ाने की आवश्यकता पड़ जाती है जिससे रोगी के जीवन को बचाया जा सके।

धूम्रपान से बचें– धूम्रपान से कैंसर भी होता है जो खांसी में खून आने का प्रमुख कारण हो सकता है। हमारे देश में खांसी के साथ बलगम में खून आने की तीसरी मुख्य वजह है– फेफड़ों का कैंसर। छोटे व बड़े सभी शहरों में युवाओं में धूम्रपान की प्रवृत्ति बढ़ने के कारण फेफड़ों में कैंसर के रोगियों की संख्या तेजी से बढ़ रही हैं। यहाँ तक कि गाँवों में हुक्का गुड़गुड़ाने के चलन की वजह से भी फेफड़ों के कैंसर के मरीज लगातार बढ़ते जा रहे हैं। किसानों तथा खेतों में काम करने वाले मजदूरों में धूम्रपान के कारण फेफड़ों के कैंसर में बढ़ोत्तरी हो रही है। देखा गया है कि पहाड़ी इलाकों में रहने वाले लोग कम उम्र से ही धूम्रपान प्रारम्भ कर देते हैं। यह एक गंभीर विषय है और इस पर तत्परता से ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि धूम्रपान से न केवल कैंसर होता है अपितु शरीर के विभिन्न अंगों में शुद्ध ऑक्सीजनयुक्त रक्त पहुँचाने वाली रक्तनलिकाओं को भी संकुचित करता है। जिससे फेफड़ों के साथ ही हाथ–पैर भी बेकार हो जाते हैं यदि बहुत लम्बे समय से धूम्रपान करने वाले व्यक्ति के खांसते समय निकलने वाले बलगम में खून आता है तो फेफड़ों में कैंसर होने की दशा से इंकार नहीं किया जा सकता है।

फेफड़ों में फोड़े के कारण खूनी बलगम– खूनी बलगम आने का चौथा कारण है फेफड़ों में मवाद का भर जाना जो सामान्य भाषा में फेफड़ों में फोड़े(abscess) की बीमारी के नाम से जाना जाता है। गंभीर संक्रमण से रक्तनलिकायें कमजोर हो जाती हैं और अचानक दबाव पड़ने पर फट जाती हैं जिससे बलगम में खून आता है। कभी–कभी युवा स्त्री व पुरुषों में फेफड़ों की रक्तनलिकाओं की संरचना में गड़बड़ी होती है। इस स्थिति में जन्म से ही फेफड़ों में पहुँचने से पूर्व ही रक्तनलिकायें आपस में जुड़ी होती हैं। रक्तनलिकाओं की इस संरचनात्मक गड़बड़ी को "पल्मोनरी आरटेरियो वीनस फिस्च्यूला"(पी.ए.वी.एम.) कहते हैं। कभी–कभी सड़क दुर्घटना के दौरान छाती में चोट लग जाने पर भी मवाद एकत्र हो जाता है जिसके कारण फेफड़ों के भीतर स्थित श्वांसनली फेफड़ों की बाहरी दीवारों से जुड़ जाती है। चिकित्सा की भाषा में इस बीमारी को "ब्रांको प्यूलर फिस्च्यूला" कहते हैं। इस खतरनाक स्थिति में भी मरीज के बलगम में खांसते समय खून आ सकता है।

अगर बलगम में खून आये, तो कहाँ जायें?– अगर आप खांसी से लगातार परेशान हैं और बलगम में खून आता है तो हाथ पर हाथ रखकर न बैठें और तुरंत बिना कोई देर किये छाती के शल्य चिकित्सक(Thoracic surgeon) से सम्पर्क करें। ध्यान रखें थोरेसिक सर्जन न कि किसी सामान्य शल्य चिकित्सक से सम्पर्क करना है। पुरानी खांसी और बलगम में खून आने के कारण की जाँच पडताल करना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि कारण जानने के बाद ही समस्या से छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार की समस्या से पीड़ित मरीज को ऐसे अस्पताल में जाना चाहिए जहाँ छाती तथा हृदय की शल्य चिकित्सा नियमित रूप से होती हो। समस्या के कारण और गम्भीरता को जानने के लिए कुछ आधुनिक जाँच जैसे ब्रान्कोस्कोपी, थोरेकोस्कोपी, मिडियास्टिनोस्कोपी, सी.टी. गाइडेड बायोप्सी और पैरास्टर्नोटामी आदि की आवश्यकता पड़सकती है। अस्पताल में जाने से पहले सुनिश्चित कर लें कि वहाँ आधुनिक रक्त बैंक, आकस्मिक चिकित्सा यूनिट और गम्भीर उपचार की सुविधा आदि उपलब्ध हों। आकस्मिक चिकित्सा कक्ष में पर्याप्त वेन्टिलेटर(वायुतंत्र) की उपलब्धता होनी चाहिए क्योंकि जीवन को खतरा होने पर यह यंत्र बहुत उपयोगी होगा। यह भी सुनिश्चित कर लें कि अस्पताल में विशेष रूप से "आरटरी इम्बोलाइजेशन फैसिलिटी" उपलब्ध है या नहीं। जीवन के लिए घातक रक्तस्त्राव की स्थिति में यह सुविधा रोगी के लिए जीवन की रक्षा कर सकती है।

अगर बलगम में खून आये, तो क्या करें?– बलगम में खून आने की स्थिति में छाती–शल्य चिकित्सक से शीघ्रातिशीघ्र सम्पर्क करें। खूनी बलगम के कारणों का पता लगायें। जाँच के लिए छाती का एक्स–रे, छाती का मल्टीस्लाइड सी.टी. स्कैन, छाती की एम0आर0आई0 तथा फेफड़ों की बायोप्सी आदि की आवश्यकता होती है। यदि संक्रमण के कारण फेफड़े का कोई भी भाग पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया हो तो जितनी जल्दी संभव हो सक्रंमित भाग से मुक्ति पाने का प्रयास करना चाहिए। खून आने की समस्या का यही एकमात्र स्थायी उपचार है। संक्रमित भाग को निकालने का अन्य फायदा

है कि फेफड़े के क्षतिग्रस्त भाग के आस–पास के स्वस्थ भाग को हानि से बचाया जा सकता है। यदि बलगम में खून का कारण फेफड़े का कैन्सर हो तो शल्य चिकित्सक द्वारा पूरे फेफड़े को निकालकर मरीज की जान बचाई जा सकती है तथा दूसरे फेफड़े को भी बचाया जा सकता है। सामान्यतः लोगों को भ्रम होता है कि एक फेफड़ा निकाल देने पर मरीज जीवित रहेगा भी या नहीं। यह एक निराधार भ्रम है। जिस प्रकार एक किडनी दान करने के बाद भी व्यक्ति सामान्य जीवन जी सकता है उसी प्रकार एक फेफड़े द्वारा भी वह सामान्य रूप से जीवन बिता सकता है। इसलिए कैन्सरग्रस्त फेफड़े को पूरी तरह हटाने में जरा भी संकोच नहीं करना चाहिए। एक अनुभवी छाती के शल्यचिकित्सक द्वारा ही इस प्रकार की शल्यचिकित्सा करानी चाहिए। बहुधा यह पाया गया है कि हृदय की शल्य चिकित्सा करने वाले चिकित्सकों को अक्सर छाती की शल्य चिकित्सा करने का पर्याप्त अनुभव नहीं होता। अतः शल्यचिकित्सक का चुनाव करते समय इस महत्वपूर्ण बात का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है।

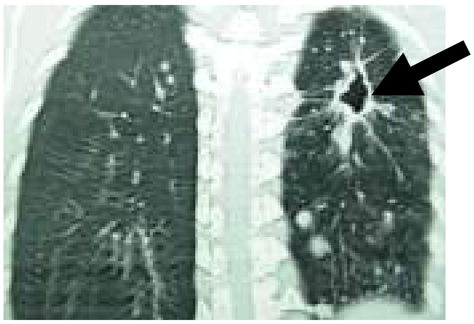

फेफड़ों का क्षयरोग खांसी में

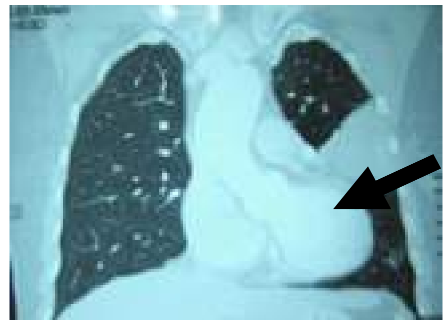

फेफड़ों का कैन्सर

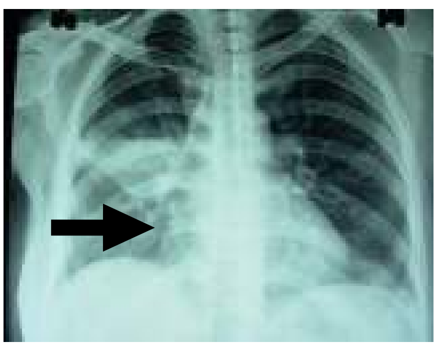

फेफड़ों में व्याप्त फोड़े

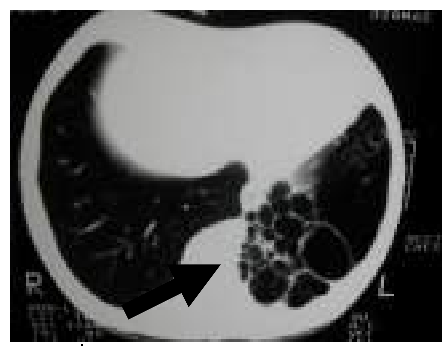

श्वांसनलिकाविस्फार(ब्रान्केक्टेसिस)

फेफड़ों में फंगस वाला ट्यूमर

शल्य चिकित्सा द्वारा हटाया गया फंगस का गोला (एस्पर्जिलोमा)